विसीलीसा और उसकी जादुई गुड़िया

रूपान्तरण व चित्रांकन: रीटा ग्राउएर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक पुराने रूसी गाँव में, जहाँ लोगों के घरों में आग बेहद कीमती थी, एक छोटी लड़की विसीलीसा अपनी बड़ी बहन के साथ रहती थी। पर बड़ी बहन विसीलीसा की खूबसूरती से जलती थी। एक दिन जब उनकी मोमबत्ती की लौ अचानक बुझ गई, उसने विसीलीसा को डरावनी और ताकतवर डायन बाबा यागा के पास उससे रोशनी लाने को भेजा।

अपनी दिवंगत माँ की भेंट दी हुई जादुई गुड़िया के मार्गदर्शन में विसीलीसा अपने ख़तरनाक सफ़र पर निकली। ''वह करो जो तुम्हारे सामने है,'' गुड़िया ने कहा, ''और सब ठीक होगा''। पर जब तक विसीलीसा बूढ़ी डायन के घर तक पहुँचती नहीं, उसे अपनी तलाश का असली मकसद भी समझ नहीं आता।

विसीलीसा रूसी लोक-साहित्य की ऐसी नायिका रही है, जो साहसी और आज़ाद स्त्री का प्रतीक है। रंगीन पेन्सिलों से आँके गए अद्‌भुत चित्रों की मदद से लेखिका-चित्रकार रीटा ग्राउएर ने इस पुरानी कथा को अपनी तरह से प्रस्तुत किया है। कथा में विसीलीसा एक छोटी बालिका है, जिसने अपनी राह खुद तलाशनी शुरू कर दी है।

विसीलीसा
और उसकी जादुई गुड़िया

रूपान्तरण व चित्रांकन: रीटा ग्राउएर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

उन सबके लिए जो अंधेरे से निकल रोशनी तक का सफ़र करने को तैयार हैं।

लेखिका की टिप्पणी

विसीलीसा और उसकी जादुई गुड़िया आलेकजांद्र आफानासेव की रूसी लोक-कथा *विसीलीसा द ब्यूटिफुल* पर आधारित है। यह लोक-कथा कई अन्य संकलनों में भी शामिल है: *रशियन फेयरी टेल्स,* जिसका अंग्रेजी अनुवाद रॉबर्ट चैण्डलर ने किया था;
द फायरबर्ड एण्ड अदर रशियन टेल्स जिसका सम्पादन जैकलीन ओनैसिस और अनुवाद बोरिस ज्वोरिकिन ने किया था; *रशियन फोक टेल्स* जिसका अनुवाद मारी पॉनसॉट ने किया था। पर कथा के परे जो व्याख्या है वह कहानी के गहरे अर्थ को स्पष्ट करती है। इस व्याख्या के अनेक स्रोत हैं, कार्ल युंग, ब्रूनो बैटलहाइम, मारी लूई फॉन फ्रांज़, तथा क्लैरिसा पिन्कोला एस्टेस, साथ ही विसीलीसा और बाबा यागा की कई दूसरी कथाएं।

बहुत बहुत समय पहले एक घने अंधेरे रूसी जंगल के छोर पर ड्रोव नाम का एक छोटा-सा गाँव बसा था। यहाँ सूरज केवल साल में छह महीने ही अच्छे से चमकता था, सो लोगों के घरों में रोशनी एक बेशकीमती चीज़ थी। इस गाँव में एक विधवा अपनी दो बेटियों के साथ रहती थी। बड़ी बेटी का नाम स्वेतलाना था और छोटी का विसीलीसा।

पूरे ड्रोव गाँव में विसीलीसा जैसा खूबसूरत दूसरा बच्चा नहीं था। गाँव वाले उसकी ओर यों खिंचे आते जैसे लौ की ओर पतंगे।

"ओय!" वे ज़ोर से कहते। "यह तो एकदम गुड़िया-सी लगती है!" वे प्यार से उसके गाल खींचते, उसका सिर थपथपाते, और भी तमाम तरीक़ों से अपना प्यार जताते। इतना प्यार कि उसकी बहन स्वेतलाना उससे जलने लगी।

"सुन्दर विसीलीसा! खूबसूरत कुकला (सुन्दर गुड़िया)! तुम किसी बेजान गुड़िया से बेहतर नहीं हो!" वह जलन के मारे ताने कसती। "नन्ही कुकला, बेचारी कुकला। तुम आसानी से टूट जाती हो!"

"अरे मेरी नन्ही फरिश्ता," विधवा माँ विसीलीसा को धीरज दिलाती। "स्वेतलाना सचमें तुम्हारा दिल दुखाना नहीं चाहती," माँ का प्यार विसीलीसा के आँसू पोंछ देता और उस प्यारी-सी बच्ची का दिल फिर से खुश हो जाता।
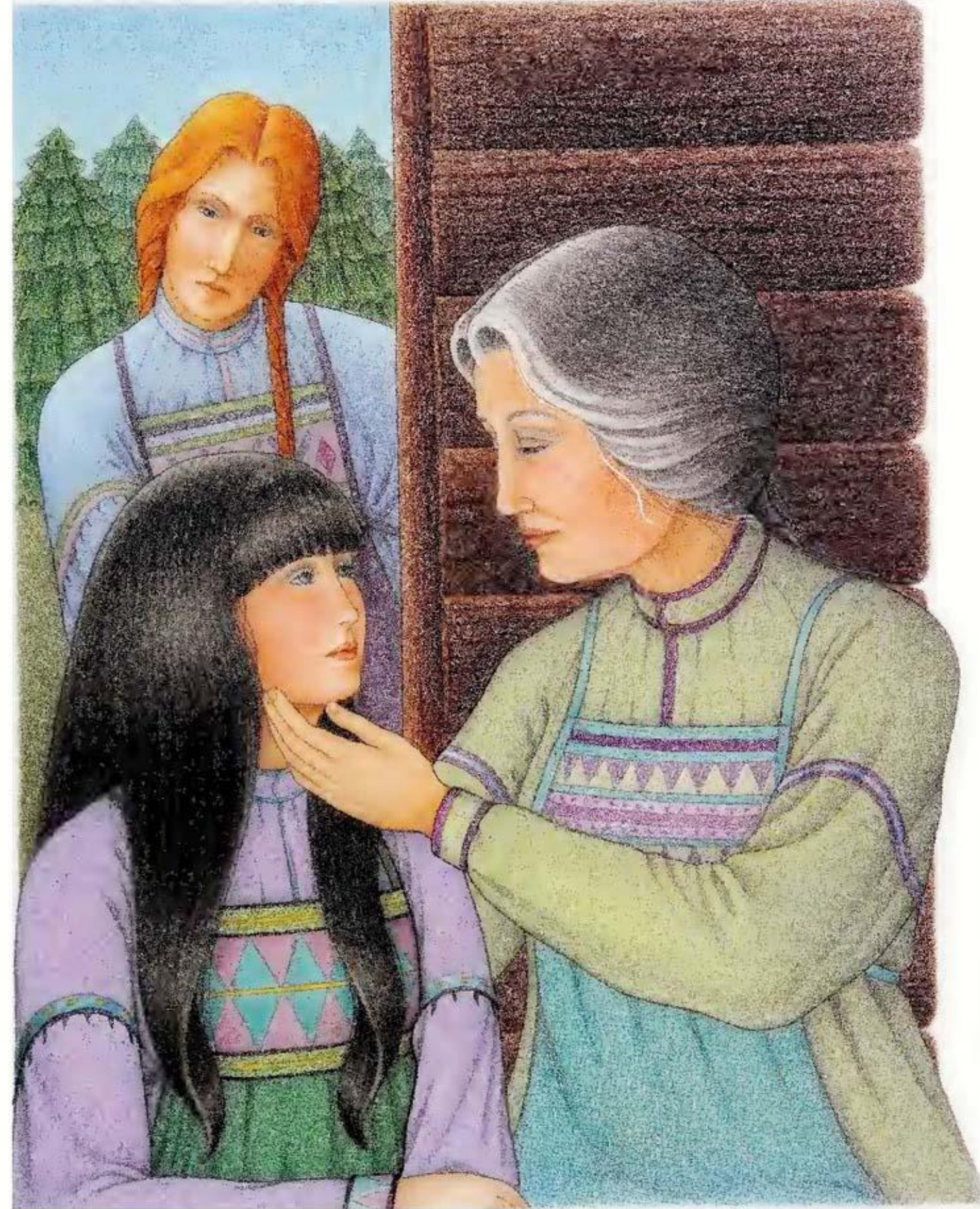
पर भाग्य को कुछ और ही मंज़ूर था। माँ बीमार पड़ी, उसने बिस्तर पकड़ लिया। एक उदास पतझड़ के दिन, यह जान कर कि अन्त समय पास है, माँ ने दोनों बेटियों को पास बुलाया ताकि उन्हें विदाई का तोहफ़ा दे सके।

"मैं यह घर और उसमें जो कुछ भी मौजूद है तुम्हें देती हूँ," उसने स्वेतलाना से कहा। "बशर्ते तुम उसके बड़े होने तक, विसीलीसा की देखभाल करने का, उसे दिल से प्यार करने का वादा करो।"

"बेशक वादा करती हूँ, प्यारी माँ," स्वेतलाना ने नेक इरादों से भर कर कहा।

माँ ने विसीलीसा को कुछ अलग ही चीज़ दी। "यह जादुई गुड़िया है," माँ ने समझाते हुए कहा। "तुम्हारी अपनी कुकला, यह कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगी। इसे खूब प्यार देना, पर कभी किसीको इसे दिखाना मत। ज़रूरत पड़ने पर यह तुम्हारी मदद करेगी।"

बेचारी विसीलीसा अपने आँसू रोक ही नहीं पाई। माँ ने उसे ज़ोर से गले लगाया, "सब कुछ ठीक होगा मेरी नन्ही," माँ फुसफुसाई। "अगर तुम वह करो जो तुम्हारे सामने हो।" तब विसीलीसा का हाथ थामे ही माँ ने आख़िरी साँस ली और हमेशा के लिए सो गई।
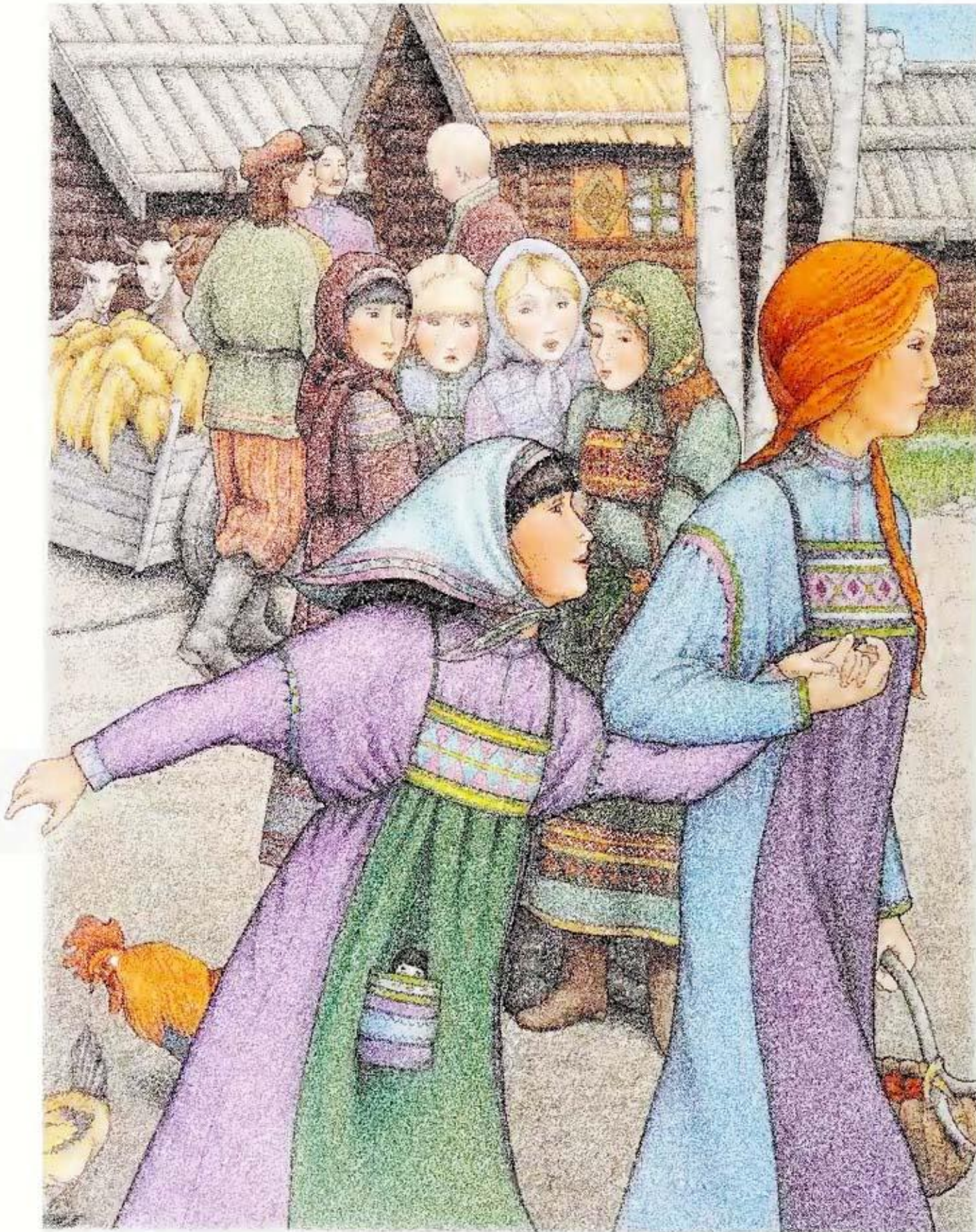
अगले कुछ सप्ताहों में पतझड़ के दिन अंधेरे होते गए। दोनों बहनों की ज़िन्दगी शान्ति से गुज़र रही थी। तब एक दिन किसीने बाज़ार में यह कह दिया कि विसीलीसा के बाल इतने लम्बे हो चुके हैं कि साटन के फीतों जैसे दिखते हैं। घर लौटते वक़्त स्वेतलाना अपनी जलन पर काबू न कर सकी।

"ओहो!" विसीलीसा ने सोचा। "मुझे फ़ौरन कुछ करना होगा, नहीं तो स्वेतलाना मेरे साथ बुरा सुलूक करेगी।" वह घर दौड़ी ताकि अपने बाल काट कर छोटे कर ले।

पर अगले दिन जब बहनें वापस दिखीं, गाँव वाले फिर से विसीलीसा की तारीफ़ करने लगे।

"विसीलीसा के छोटे बालों को तो देखो!" एक ने कहा। इस पर बाकी भी पास घिर आए। "अरे ये तो ऐसे चमक रहे हैं जैसी चाँद से रोशन रात।"

"ओहो!" विसीलीसा ने सोचा। "अब क्या करूँ? स्थिति तो बदतर होती जा रही है।" वह घर भागी ताकि बालों को बाबुश्का (बालों पर बांधा जाने वाले रुमाल) से ढ़क ले जिससे कोई उन्हें देख ही न सके। पर जब वह लौटी गाँव वालों ने और भी गुल-गपाड़ा किया।

"विसीलीसा का बाबुश्का कितना सुन्दर है," वे बोले। "वह तो हमेशा ही सुन्दर लगती है।"

स्वेतलाना का दिल डाह और गुस्से से भर गया। उसने विसीलीसा को घर में बन्द कर दिया।

विसीलीसा अपनी गुड़िया के साथ घर में ही रही। उसने गुड़िया को चाय परोसी और कहानियाँ सुनाईं। तब उसके ऊनी बालों की चोटियाँ बनाईं। जब वह उदास हुई, गुड़िया ने तसल्ली देते हुए कहा, "फ़िक्र न करो, तुम्हारी बहन फिर से तुम्हें प्यार करेगी।"

"पर मैं उसे कितना दुखी करती हूँ। तुम कैसे कह सकती हो कि वह मुझ से प्यार करेगी?" कहते-कहते विसीलीसा के आँसू छलक आए।

"मैं माँ के प्यार से बनी हूँ, सो उस सच्चाई को भी देख पाती हूँ जो दूसरों को नज़र नहीं आती। तुम अफ़सोस मत करो," गुड़िया ने ढ़ाढ़स बंधाते कहा। तब विसीलीसा को खुश करने के लिए उसने एक गीत गाया। जल्द ही विसीलीसा भी उसके साथ गा रही थी।

उस शाम जब स्वेतलाना घर पहुँची उसे गाने की आवाज़ आई। वह तेज़ी से अन्दर घुसी, "तुम गा कैसे सकती हो?" वह चीखी। विसीलीसा ने फ़ौरन अपनी गुड़िया छिपाई। "तुम्हें तो अकेली और उदास होना चाहिए, क्योंकि तुम अकेली घर में बन्द थी।" इतना कह वह अपनी बहन की ओर झपटी।

विसीलीसा बचाव में पीछे हटी। स्वेतलाना मेज़ से टकराई। कमरे में जल रही इकलौती मोमबत्ती उछल कर नीचे गिरी, और वह बेशकीमती रोशनी बुझ गई।

पल भर को शाम के झुटपुटे में सब कुछ स्तब्ध और मौन था।

"अब देखो तुमने क्या कर डाला...." स्वेतलाना की आवाज़ रुंधी थी और कांप रही थी। "तुम्हें बाबा यागा से रोशनी लेने जाना होगा। यह नहीं करोगी तो हम हमेशा अंधेरे में रहेंगे," इतना कह उसने विसीलीसा को घर से बाहर धकिया दिया।

बेचारी विसीलीसा। बाबा यागा दरअसल एक भयानक बूढ़ी डायन थी, जो आदमखोर थी। वह घने जंगल के बीचोंबीच रहती थी। उसका इज्बा (कुटिया/मकान) विशाल मुर्गी की टांगों पर चलता था। अगर ड्रोव में किसीकी लौ बुझ जाती तो उसे फिर से सुलगाने का एक ही तरीका था, बाबा यागा के पास से उसे लाना।

विसीलीसा ने जेब से अपनी गुड़िया निकाली, "प्यारी कुकला अब तुम्हें ही बताना होगा कि मैं क्या करूं। मैं वादा करती हूँ कि जो तुम कहोगी वह सचमें मानूंगी।"

"हम रोशनी को साथ-साथ तलाशेंगे," जादुई गुड़िया ने कहा। "जो तुम्हारे सामने हो अगर उसे करते जाओ तो सब ठीक होगा।"

सो जैसे-जैसे झुटपुटे की ललौंस हल्की पड़ती गई, ठण्डी रूसी रात में सितारे नज़र आने लगे। विसीलीसा ने गुड़िया को हिफ़ाजत से जेब में रखा और बाबा यागा के जंगल की ओर बढ़ चली।
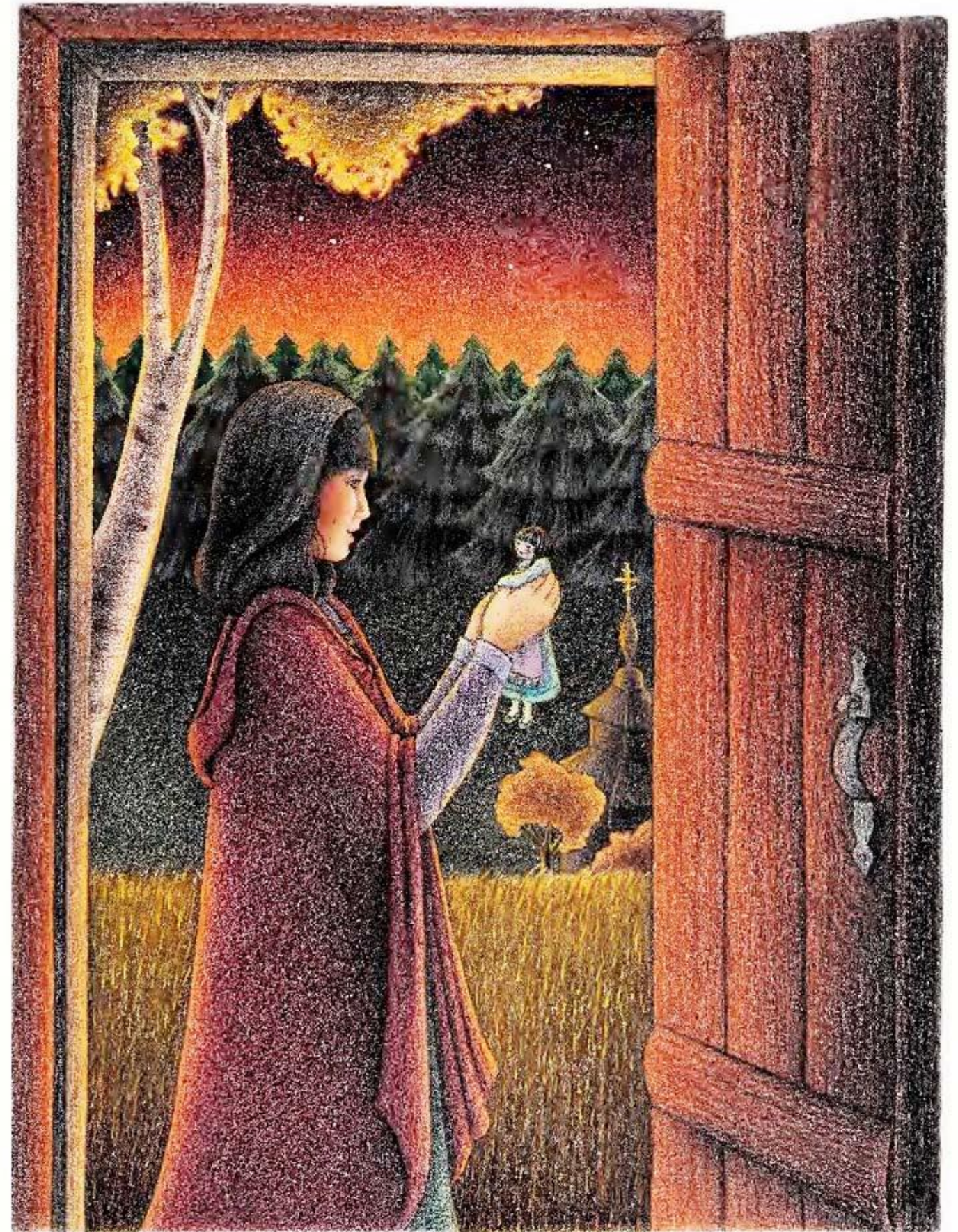
रात का जंगल पेड़ों के अनन्त शामियाने तले बहुत ही विशाल और अपशकुनी लग रहा था। "बाबा यागा के जंगल से सावधान!" देवदार के पेड़ फुसफुसाए "बूढ़ी डायन की अजीबियत से सावधान!" भुर्ज के पेड़ों ने चेताया।

आखिरकार जब चाँद पेड़ों के ऊपर से झाँकने लगा, विसीलीसा को काले घोड़े पर बैठा, काली पोशाक पहने एक सवार दिखा। वह कुछ दूर कंटीली झाड़ियों के पीछे रुका हुआ था।

"मेरे पीछे-पीछे चली आओ," उसने कहा। उसका घोड़ा बेसब्री से अपनी टाँगें पटक रहा था।

विसीलीसा घबराई। वह पलट कर भाग जाना चाहती थी, पर जादुई गुड़िया ने हौसला बढ़ाते कहा, "जो सामने है वह करो और सब ठीक होगा।"

घबराते हुए विसीलीसा ने अपना चोंगा खुद के गिर्द लपेटा और कंटीली झाड़ियाँ पार करते घुड़सवार के पीछे चल दी। रात में आगे बढ़ते समय मुड़ी-तुड़ी शाखाएं मानो उसे पकड़ कर रोक रही थीं। चाँद आकाश में उठता गया, जिससे डरावनी छायाएं दिखाई देने लगी थीं। हवा के बहने से ये छायाएं नाचते हुए दानवों सरीखी लग रही थीं।

"वह करो जो तुम्हारे सामने है...," विसीलीसा ने खुद को कहा। "वह करो जो तुम्हारे सामने है...।"

घुड़सवार उसे जंगल में दूर तक ले गया। जब पेड़ों की छतरी के बीच से भोर का प्रकाश आने लगा घुड़सवार छायाओं में घुसा और तब गायब हो गया।

"मेरी प्यारी कुकला," विसीलीसा ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा, "वह घुड़सवार तो गायब हो गया, उसके बिना तो हम खो ही जाएंगे।
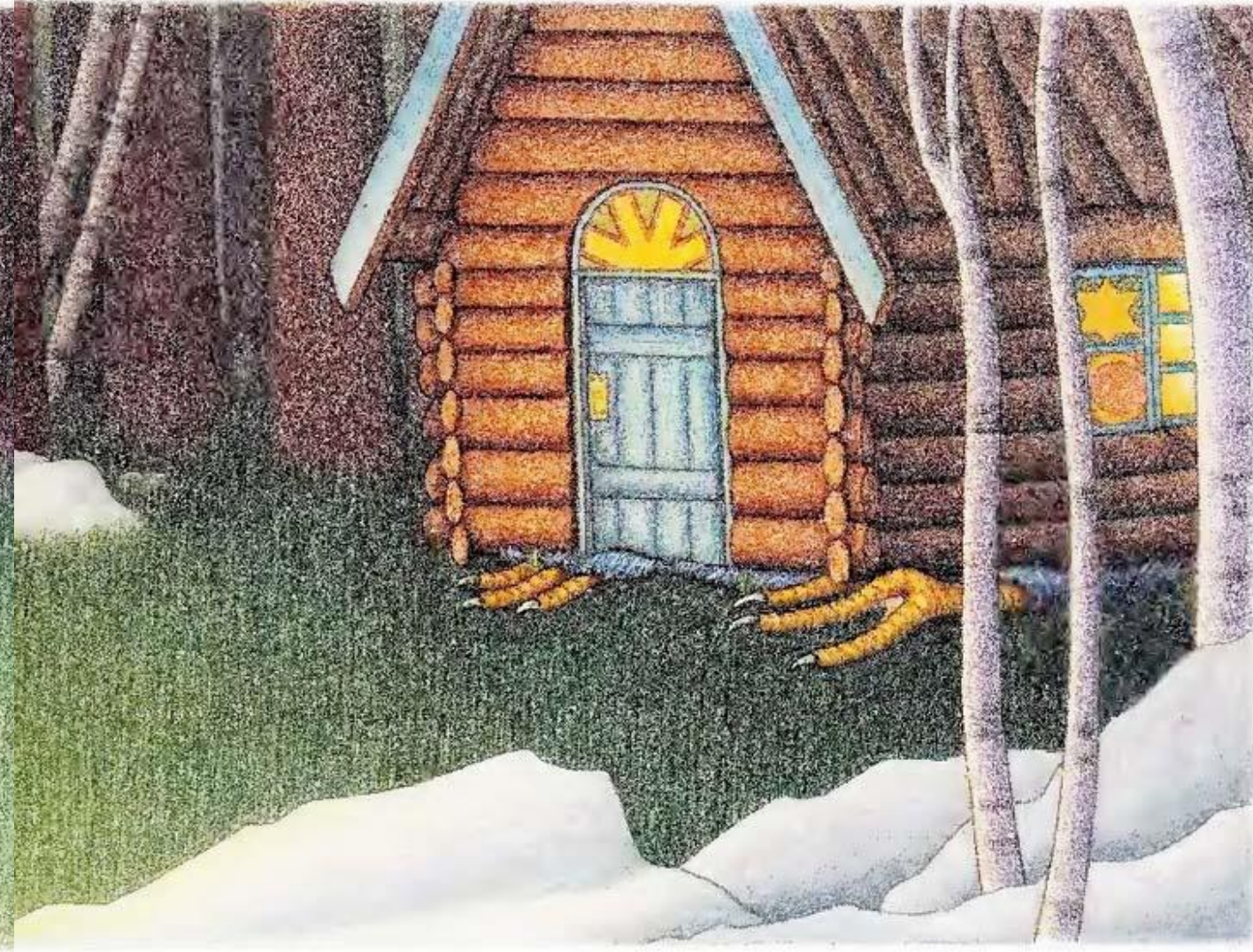
जादुई गुड़िया कुछ कहती उसके पहले ही घोड़े की टापों ने एक और घुड़सवार के आने का ऐलान किया। विसीलीसा तेज़ी से मुड़ी। भोर की रोशनी में उसे हाथी-दांत के रंग का एक घोड़ा दिखा। उस पर बैठा सवार झक्क सफ़ेद कपड़े पहने था।

वह उसे तब तक देखती रही जब तक वह रोशनी की कौंध-सा जंगल की एक खुली जगह न पहुँच गया। तब वह उस खुली जगह से एक इज्बा के ऊपर उड़ा, ऊपर, और ऊपर। और तब सुबह की चमचमाती रोशनी में समा गया।

अचानक हवा में एक डरावनी आवाज़ गूंजी। विसीलीसा की आँखें अचरज से फैल गईं। वह इज्बा मुर्गी की टाँगों पर उठ खड़ा हुआ था और गोल-गोल चक्कर लगा रहा था।

"छीः छीः रूसी हड्डियाँ!" इज्बा से चीखती आवाज़ आई। "बताओ यहाँ क्यों आई हो!"

विसीलीसा कुछ बोल ही नहीं सकी, वह डर से थर्रा जो रही थी। पर जादुई गुड़िया ने हिम्मत बढ़ाई, "तुम जानती तो हो कि तुम यहाँ क्यों आई हो। जो करना है वह करो।"

गुड़िया की सलाह मान विसीलीसा पेड़ की आड़ से निकली। "मैं तुमसे रोशनी लेने आई हूँ," किटकिटाते दाँतों के बावजूद वह बोली।

"इतनी जल्दी नहीं, पहले तो तुम्हें मुझे पकड़ना होगा।" इतना कह इज्बा खुली जगह से दौड़ पड़ा।

"पल भर भी बरबाद न करो विसीलीसा," गुड़िया ने कहा।

बड़ी-बड़ी चट्टानों को लांघती, कंटीली झाड़ियों के बीच से विसीलीसा इज्बा के पीछे दौड़ी।

अब धुंआती राख बरसने लगी, और हवा में लाल रंग लरजने लगा, हर जगह जलने की बू फैली, विसीलीसा के हाथ-पैर काले पड़ने लगे, तब भी वह इज्बा का पीछा करती रही।

आख़िरकार वह उस नदी किनारे आई जिससे ऊँची लपटें उठ रही थीं, और गरमी इतनी थी कि साँस लेना तक मुश्किल था। बाबा यागा का इज्बा सीधे आग की नदी में कूद गया! विसीलीसा ने अविश्वास से उसे देखा।

"ओह नहीं!" वह रो पड़ी और रोते-रोते घुटनों के बल गिर पड़ी।

अपने आँसुओं के बीच उसने लपटों के बीच किसीको उछलते देखा। वह लाल पोशाक पहने एक घुड़सवार था जिसका घोड़ा भी लाल ही रंग का था।

"बाबा यागा का इज्बा आग से महफ़ूज़ निकल चुका है। तुम भी निकल सकोगी विसीलीसा," उसने पुकार कर कहा।

अपने आँसू पोंछ विसीलीसा पैरों पर खड़ी हुई और एक कदम नदी की तरफ़ बढ़ी।

"तुम भी बच निकलोगी विसीलीसा, तुम भी," फुफकारती आग ने कहा। विसीलीसा ने नदी की ओर एक और कदम बढ़ाया।

"जो सामने है वह करो विसीलीसा," गुड़िया ने उकसाया। हिम्मत कर विसीलीसा धू-धू जलती नदी में उतर गई।

वह आग की नदी में घुसी ही थी कि घुड़सवार उसके पास आ गया। उसने विसीलीसा को अपनी बाँहों में उठाया और उसे लपटों के पार ला सुरक्षित उतार दिया। तब वह वापस नदी में ही अलोप हो गया।
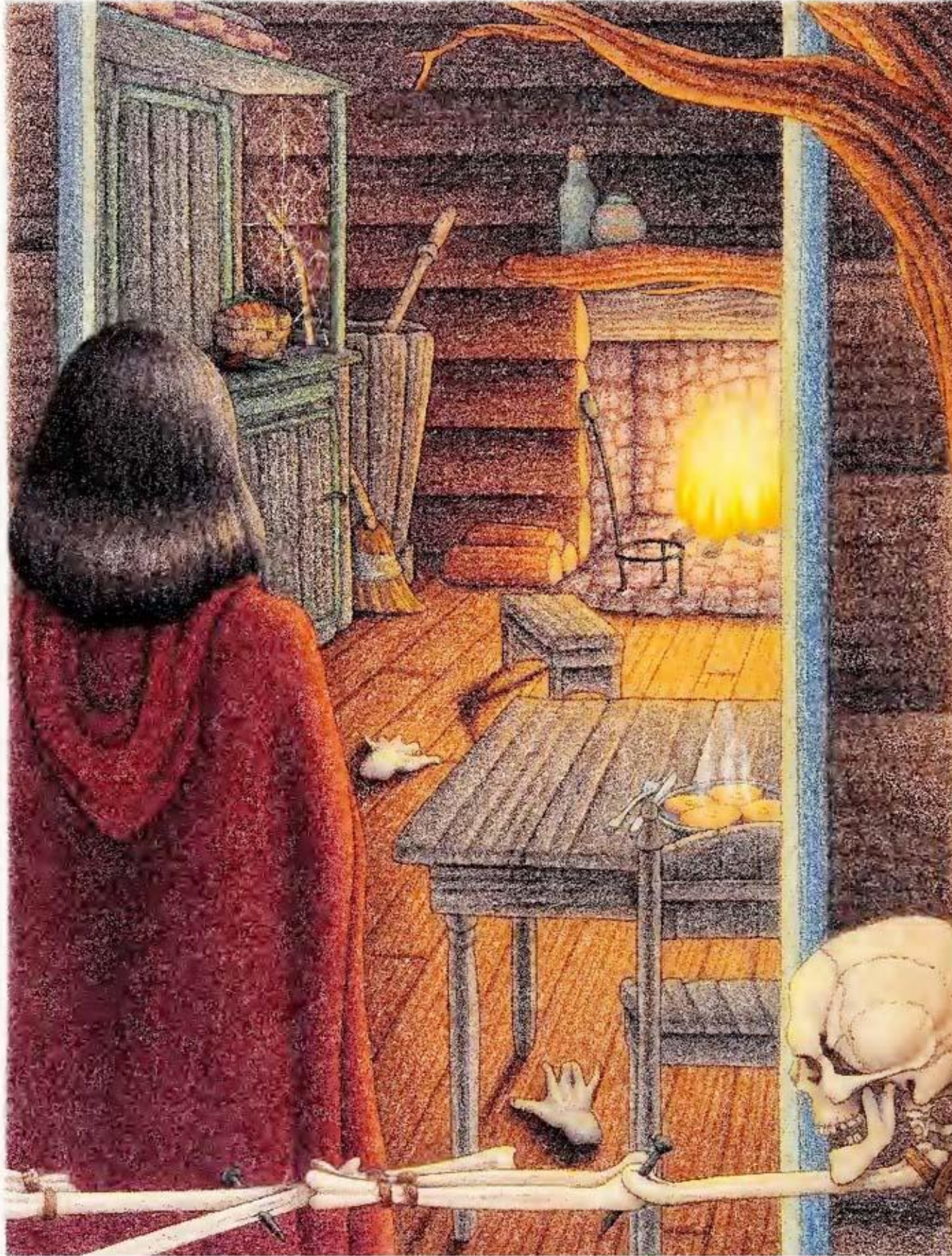
विसीलीसा के सामने डरावनी बाबा यागा का इज्बा था। घर के बाहर इन्सानी हड्डियों की बाड़ थी, उसके हरेक खम्भे पर एक खोपड़ी धरी थी। इज्बा का दरवाज़ा साधारण दरवाज़ा नहीं था बल्की दुबले-पतले हाथों से बना था। और कुंडी की जगह दाँत थे।

''ओहो,'' विसीलीसा ने चैंक कर साँस खींचते हुए तब कहा, जब एक जोड़ी हाथ मकड़ियों की तरह रेंगते हुए निकले। उन्होंने कुंडी खोली, और दरवाज़ा खुला छोड़ अन्दर घुस गए।

विसीलीसा ने थूक निगली। ''बा-बाबा यागा,'' उसने हाँक लगाई। पर छोटे-से इज्बा सें कोई आवाज़ न सुनाई दी। ''मुझे पता है कि मैं क्यों आई हूँ,'' उसने खुद को याद दिलाया, ''और यह भी कि मुझे क्या करना है।'' वह दबे पाँव अन्दर झांकने बढ़ी।

अन्दर अलाव में खुशनुमा आग जल रही थी। मेज़ पर रखे कटोरे में कुटू के आटे के चीलड़े धरे थे। सुनहरे होने तक सेंके गए चीलड़ों की खुशबू इतनी अच्छी थी कि विसीलीसा का पेट भूख से गुड़गुड़ा उठा।

''बा-बाबा यागा,'' उसने फिर से आवाज़ लगाई। पर इज्बा में कोई नज़र न आया। उसे ज़बरदस्त भूख लगी थी, सो वह इज्बा के अन्दर घुसी और मेज़ की ओर बढ़ गई। ''उम्मीद है कि बाबा यागा इस बात से नाराज़ न होंगी कि मैंने उनके चीलड़े खा लिए हैं,'' विसीलीसा ने अपनी गुड़िया के साथ मिल-बांट कर चीलड़े खाते हुए कहा।

खाना खत्म हुआ तो विसीलीसा ने अपनी पीठ कुर्सी पर पीछे की ओर टेकी और आग की खुशनुमा रोशनी को निहारने लगी। ''कैसा सफ़र किया है हम दोनों ने कुकला,'' उसने गहरी साँस खींचते हुए कहा।

अचानक आग की लपटें इस कदर चमकने लगीं कि विसीलीसा को अपनी आँखें ढ़कनी पड़ीं। लपटें इस तरह नाच रही थीं मानो कोई बुढ़िया नाच रही हो। और तब लपटें सचमें एक बुढ़िया में बदल गईं। बाबा यागा आग से उछल बाहर आई।

"छीः, छीः रूसी हड्डियाँ! क्या तुम सोच रही हो कि तुम्हें मेरी रोशनी मिलेगी?" वह चिंचियाती बोली। "अच्छा बताओ कि तुम बदले में मेरे लिए क्या लाई हो?"

"क-क-कुछ भी नहीं," विसीलीसा चौंक कर बोली और अपनी गुड़िया को जल्दी से चोंगे के नीचे छिपा दिया।

"शायद मुझे तुम्हें खा जाना चाहिए, जैसे तुमने मेरे चीलड़े खा लिए," बूढ़ी डायन ने ताना कसते और बदरंग दाँत दिखाते कहा। "पर मैं पहले एक झपकी लूंगी। जागने पर जो होगा, सो होगा।"

बाबा यागा ने सीटी बजाई और वे दुबले हाथ एक बड़े-से हाँडे में पानी भर लाए। बाबा यागा ने हाँडे को लिया और उसे आग पर चढ़ा दिया। वह कुर्सी पर बैठी और अपनी हड़ियल टाँगें मेज़ पर रख दीं। हाथों की वह जोड़ी उसके कंधों पर जा टिकी, बूढ़ी डायन फ़ौरन सो गई और खर्राटें मारने लगी।
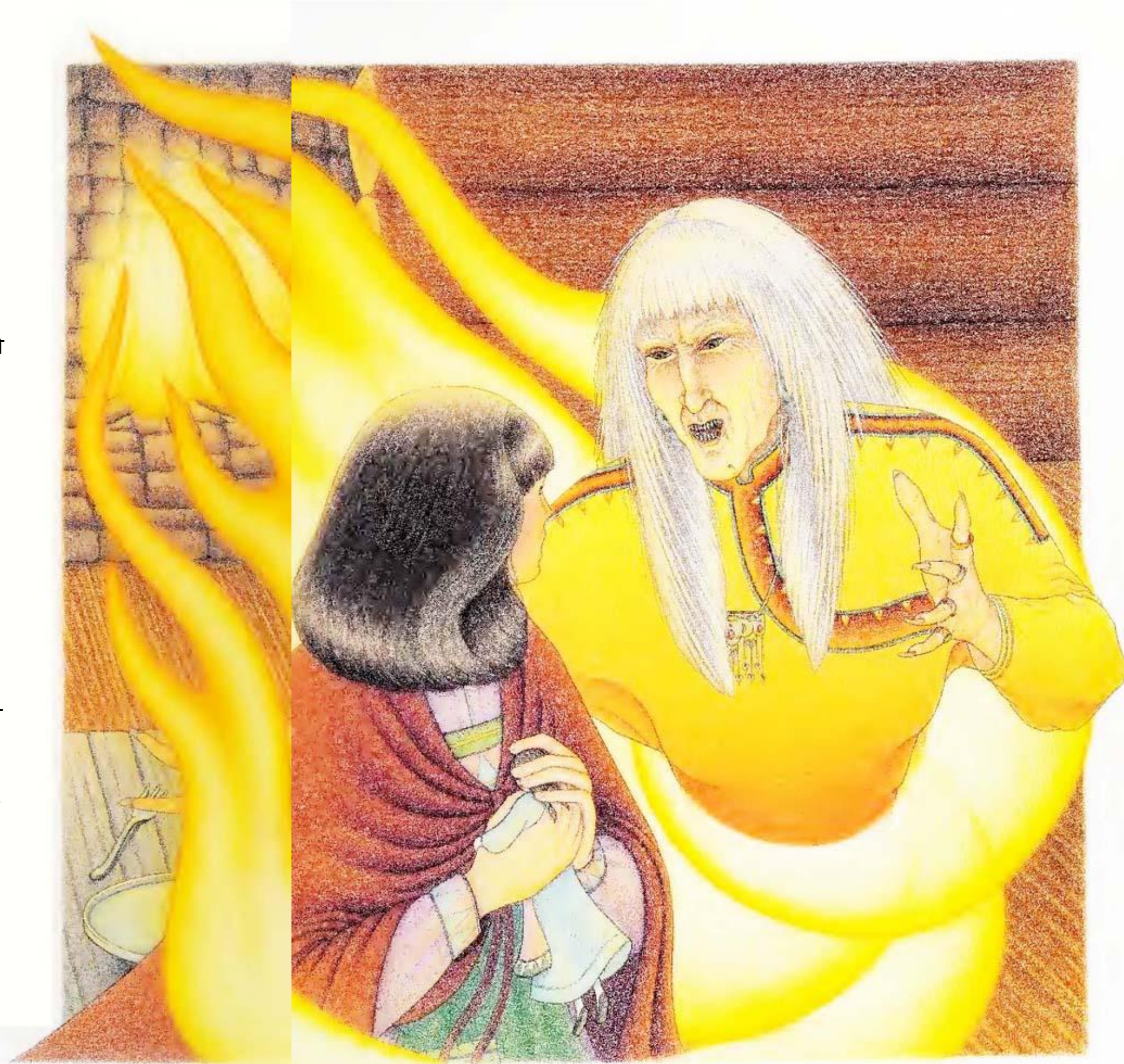
विसीलीसा ने ग़ौर किया कि सोते-सोते डायन का आकार बदलने लगा। उसके पैर लम्बे हुए और उनके टकराने से दरवाज़ा धड़ाम से बन्द हो गया और उसकी नाक ने छत में छेद कर दिया।

"अब मैं क्या करूँ?" विसीलीसा को फिक्र हुई। उसने गुड़िया को अपने चोंगे से निकाला। "बाबा यागा इतनी बड़ी हो चुकी है कि मुझे एक ही निवाला बना चबा जाए।"

"जो सामने है वह करो विसीलीसा," जादुई गुड़िया ने उसका हौसला बढ़ाया। उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि विसीलीसा को सुनाई ही नहीं दे रही थी।

"क्या हुआ प्यारी कुकला? तुम्हें क्या हो रहा है?" विसीलीसा में घबरा कर पूछा।

"सफ़र ने मुझे थका दिया है, पर सब ठीक होगा। भरोसा रखो। सब ठीक होगा।"

"मैं भरोसा रखूँगी," विसीलीसा ने अपनी नन्ही सहेली से वादा किया, और जो मेरे सामने है, वह मैं करूँगी।"

तब उसने प्यार से गुड़िया को अपनी जेब में रखा और कोठार को खोला। वहाँ से उसने माँस, चकुंदर, पत्ता गोभी, गाजर, प्याज़ और सिरका निकाल खौलते पानी में डाला और उसे खदबदाने दिया। ताकि भूखी डायन जब जगे शोरबे को खा सके। जल्द ही इज्बा में स्वादिष्ट शोरबे की दिलकश खुशबू फैल गई। "मम्म्म्म...." बाबा यागा नींद में बड़बड़ाई।

विसीलीसा ने मुड़कर उसे देखा। बाबा यागा की नाक छोटी लगने लगी थी।

विसीलीसा ने चीलड़े के कटोरे को साफ़ किया। तब इज्बा को झाड़ा-पोंछा। गर्द साफ़ की। जब तक ये काम पूरे हुए डायन के पैर मेज़ से नीचे गिर चुके थे, और धरती तक भी नहीं पहुँच रहे थे।

बाहर सूरज ढ़ल रहा था और रुपहला चाँद उठ रहा था। इज्बा अब काफ़ी ठण्डा हो चला था। उस बहादुर बच्ची ने अल्मारी से एक कम्बल निकाला और सोती हुई बाबा यागा को ढ़क दिया।

तब उसने आग में कुछ और लकड़ियाँ डालीं और गुड़िया हाथों में ले अलाव के पास बैठ गई। "किस कदर लम्बा दिन रहा है यह," गुड़िया को बाहों में ले उसने उसाँस भरी।

पर उसकी नन्ही सहेली चुप ही रही, न उसने कोई आवाज़ की, न हिली-डुली। "क्या तुम सो रही हो?" विसीलीसा ने उम्मीद से पूछा, और तब रो पड़ी।

उसके रोने की आवाज़ से बूढ़ी डायन हिली और जाग पड़ी, उसने चारों ओर देखा। "छीः छीः रूसी हड्डियाँ! मुझे देने को तुम्हारे पास कुछ है, यह मुझे दिख गया। शायद में तुम्हें न खाऊँ। शायद अपनी रोशनी भी दे दूँ," उसने मोल-तोल करते कहा, "अगरचे तुम अपनी गुड़िया मुझे दे दो।"

"पर यह तो मेरी माँ के प्यार से बनी है!" विसीलीसा चीख पड़ी।

"यह सिर्फ़ कपड़े और रंग से बनी है," बूढ़ी डायन हंस कर बोली। "अगर जो सामने है तुम वह नहीं कर सकती तो तुम भी उतनी ही लाचार और बेबस हो जितनी तुम्हारी गुड़िया है।"

विसीलीसा उतनी चुप हो गई जितना कोई ताल बिना हवा के होता है। उसने गुड़िया को अपने चेहरे के पास ऊपर उठाया। गुड़िया के चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान थी, और आँखों में अपार शान्ति।

उसने गुड़िया को देर तक दिल से चिपटाया - जब तक उसके अन्दर कुछ स्पन्दन न होने लगा। एक स्थिर, छोटी आवाज़ उसके दिल में कुछ कहने लगी। विसीलीसा को अब मालूम हो गया था कि उसे क्या करना है।
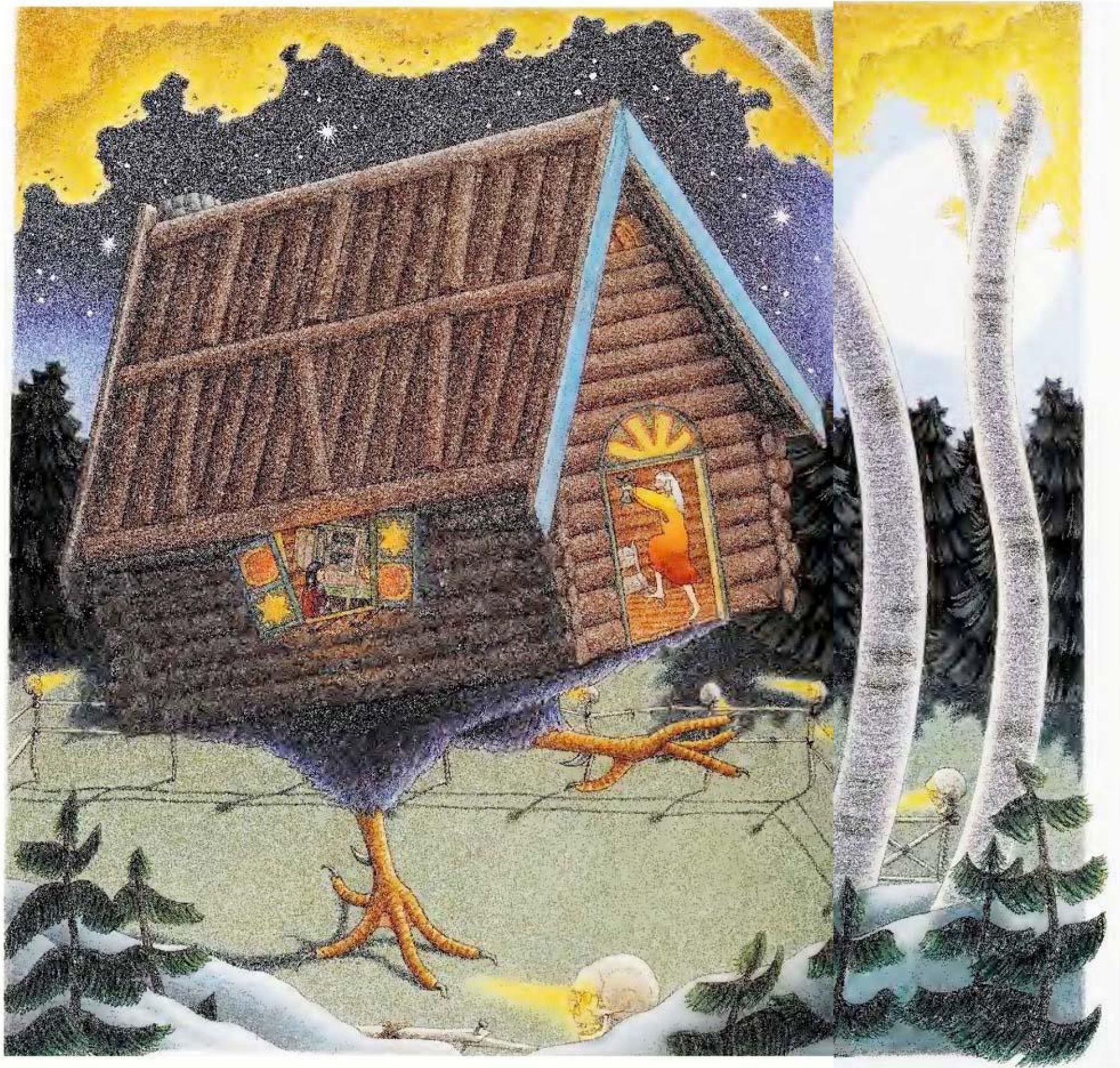
विसीलीसा ने जादुई गुड़िया को विदाई देते चूमा और उसे बाबा यागा को हमेशा के लिए दे दिया।

बूढ़ी डायन इतना खुश हो गई कि गुड़िया के साथ नाचने लगी। और मकड़ी से दुबले हाथ उसके कंधों पर। तब मेज़ नाचने लगी, उसके बाद कुर्सी, दरवाज़ा और खिड़कियाँ अपने आप खुल गए। काठ के इज्बा में सब कुछ नाच रहा था, खुद इज्बा भी। जंगल के पेड़ तक, तारों और चाँद के साथ नाच रहे थे।

बाबा यागा नाचते-नाचते धुंए के एक झोंके में गायब हो गई। "रोशनी ले जाओ विसीलीसा," उसकी आवाज़ लपटों से सुनाई दी। "वह रोशनी तुम्हें घर तक ले जाएगी।"

इतनी खुश विसीलीसा पहले कभी नहीं हुई थी। घर की ओर बढ़ते उसका दिल बल्लियों उछल रहा था। बाबा यागा की रोशनी उसे घने, काले जंगल से बाहर ले जा रही थी।
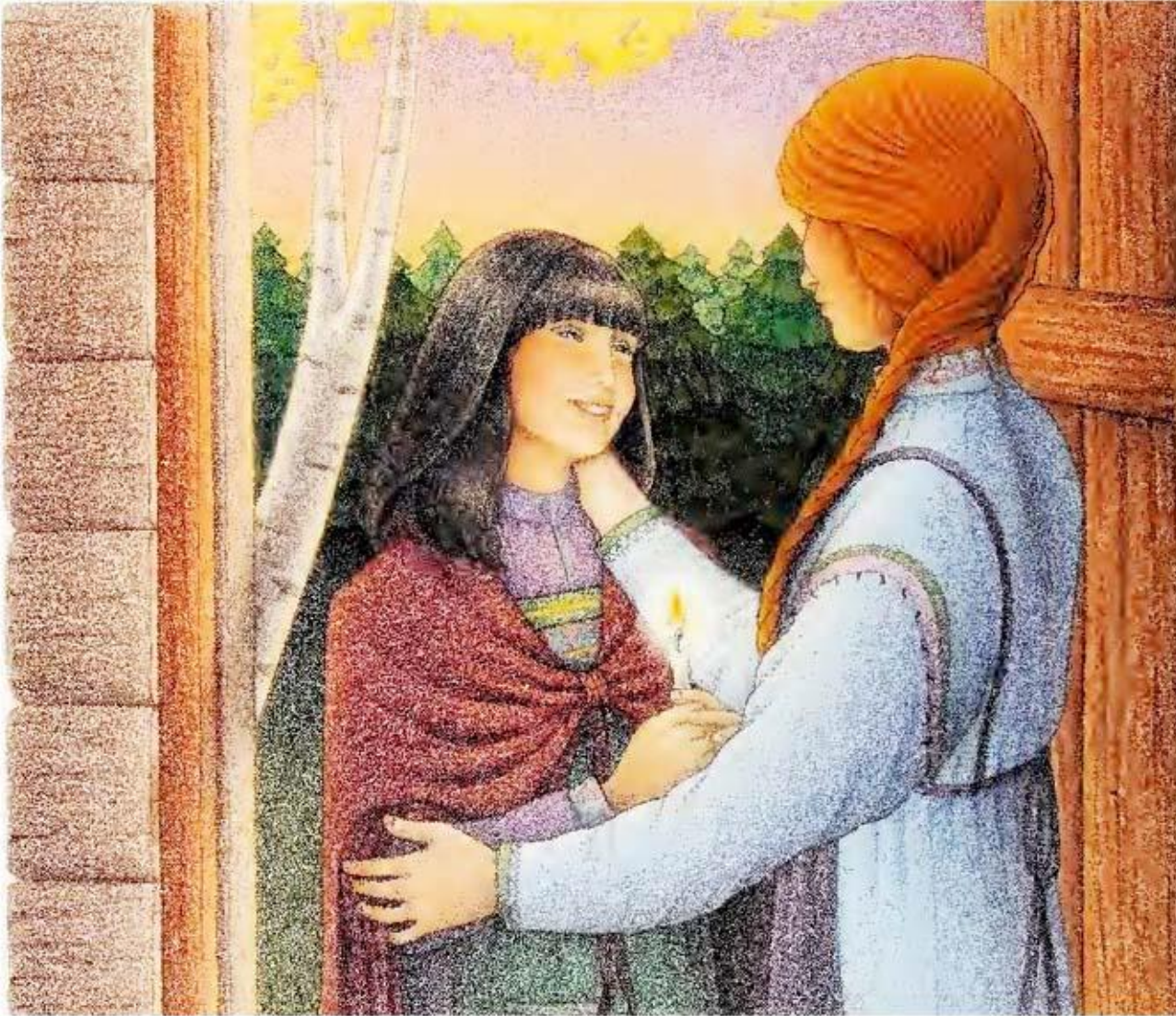
जब वह मोमबत्ती थामे दहलीज पार कर घर में घुसी, स्वेतलाना उसे गले लगाने दौड़ी। “तुम्हें देख मैं बहुत खुश हूँ। मैं कितनी फ़िक्र कर रही थी। तुम गई उसी पल से मैं अकेली और उदास हो गई। जितनी उदास तुम्हारे बिना हुई, उतनी पहले कभी हुई ही नहीं थी।”

उसने विसीलीसा के चेहरे को अपने हाथों में थामा, और गाते पाखी की सी आवाज़ में बोली, “मुझे माफ़ करना मेरी बहना। मैंने तुमसे बुरा सुलूक किया। पर मैं तुमसे उतना ही प्यार करती हूँ, जितना खुद अपनी ज़िन्दगी से।”

उस दिन से छोटे-से ड्रोव गाँव में मोमबत्तियाँ तेज़ चमक के साथ जलने लगीं। विसीलीसा अपने दिल की आवाज़ हमेशा सुनती रही। और सचमें सब कुछ ठीक ही हुआ।

रीटा ग्राउएर को हमेशा ही अपने अन्दरूनी विचारों और अन्तर्दृष्टियों को रचनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने की ज़रूरत महसूस होती रही है। फ्लौरिडा विश्वविद्यालय में युवा छात्रा के रूप में उन्होंने नाटक व कला का अध्ययन किया। विगत बीस वर्षों से उन्होंने कई नाटक लिखे, निर्देशित किए, इस विषय को पढ़ाया, नाटकों में हिस्सेदारी की।

विसीलीसा की कहानी की शुरुआत भी छोटे दर्शकों के लिए प्रदर्शन के विचार से हुई थी। पर वे अपने चित्रकारी के हुनर को कभी बिसरा न पाई थीं। उन्होंने तय किया कि वे बच्चों के लिए इस कहानी को अधिक प्रभावी रूप से तब ही प्रस्तुत कर सकेंगी, जब उसमें चित्र भी हों। ताकि बच्चे इसे खुद नाटक का रूप दे सकें। *विसीलीसा और उसकी जादुई गुड़िया* इसका नतीजा था।

रीटा ग्राउएर मियामी,फ्लौरिडा में बड़ी हुईं और अब अपने पति जिम और दो बिल्लियों - स्पाइक और रूडी - के साथ ऑरेगॉन के एक छोटे कस्बे में रहती हैं।